कला में स्त्री–प्रतिनिधित्व का परिवर्तनः पितृसत्तात्मक समाज से नारी सशक्तिकरण तक

डॉ. गरिमा कुमारी
असिस्टेंट प्रोफेसर, (चित्रकला विभाग)
रघुनाथ गर्ल्स पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, मेरठ
ईमेलः*garimakumari05@gamil.com*

Reference to this paper should be made as follows:
Received: 14-11-25
Approved: 08-12-25

डॉ. गरिमा कुमारी

कला में स्त्री–प्रतिनिधित्व का परिवर्तनः पितृसत्तात्मक समाज से नारी सशक्तिकरण तक

Artistic Narration 2025,
Vol. XVI, No. 2,
Article No.28 Pg.198-204

Online available at:
https://anubooks.com/journal-volume/artistic-narration-dec-2025-vol-xvi-no2

Referred by:
DOI:*https://doi.org/10.31995/an.2025.v16i02.028*

सारांश

भारतीय कला परंपरा में स्त्री का स्थान सदैव जटिल और परिवर्तनशील रहा है। प्राचीन काल से ही कला में स्त्री का चित्रण प्रायः देवी, शक्ति या सौंदर्य की प्रतीक के रूप में हुआ है, परंतु स्वयं महिला कलाकारों की भागीदारी अपेक्षाकृत सीमित रही। समय के साथ–साथ भारतीय महिला कलाकारों ने न केवल कला सृजन के क्षेत्र में अपनी पहचान स्थापित की, बल्कि सामाजिक, धार्मिक और लैंगिक असमानताओं के विरुद्ध अपनी अभिव्यक्ति को भी सशक्त रूप से प्रस्तुत किया। स्वतंत्रता–पूर्व काल में स्त्री को कला में प्रायः पुरुष दृष्टि से देखा गया, जबकि स्वतंत्रता–उत्तर भारत में महिला कलाकारों ने अपनी कृतियों के माध्यम से पितृसत्तात्मक व्यवस्था को चुनौती दी और 'नारी चेतना' को केंद्र में लाया। समकालीन कला में यह चेतना और प्रखर हुई है– जहाँ महिला कलाकार अब केवल प्रेरणा का स्रोत नहीं, बल्कि सृजन की सक्रिय वाहक बन चुकी हैं।

इस शोध पत्र का उद्देश्य यह विश्लेषण करना है कि भारतीय महिला कलाकारों ने बदलते समय के साथ कला के माध्यम से किस प्रकार अपनी अभिव्यक्ति और अस्तित्व को पुनर्परिभाषित किया है। साथ ही, यह अध्ययन उन प्रमुख महिला कलाकारों के योगदान पर भी प्रकाश डालता है जिन्होंने समाज और कला दोनों में स्त्री की सशक्त उपस्थिति स्थापित की।

मुख्य शब्द

महिला कलाकार, प्राचीन कला, आधुनिक कला, नारी उद्भव, नारी सशक्तिकरण, स्त्री प्रतिनिधित्व

https://doi.org/10.31995/an.2025.v16i02.028

1. प्राचीन भारतीय कला में स्त्री का चित्रण

प्राचीन भारतीय कला में महिलाओं का चित्रण मुख्यतः देवी, नायिका और यक्षिणी के रूप में किया जाता था, और यह रूढ़ि बद्ध परंपरा 1850 ई. तक औपनिवेशिक काल में भी जारी रही। हिंदू धर्म में स्त्री का स्वरूप द्वंद्वात्मक है–एक ओर वह प्रजनन, उदारता और त्याग की प्रतीक है, वहीं दूसरी ओर वह शक्ति, विनाश और गतिशीलता का प्रतीक भी है। देवी को विभिन्न रूपों में दर्शाया जाता है, जैसे लक्ष्मी, दुर्गा, काली, गंगा आदि, जो उत्पत्ति और विपत्ति दोनों का प्रतिनिधित्व करती हैं। स्त्री केवल आध्यात्मिक रूप में ही नहीं, बल्कि कला, संस्कृति और समाज में भी महत्वपूर्ण रही है। कामसूत्र में महिलाओं की 64 कलाओं में निपुणता का उल्लेख है, जिसमें चित्रकारी, वास्तुकला, सजावट और अलंकरण जैसी कलाएँ शामिल हैं। पौराणिक कथाओं में जैसे उषा और अनिरुद्ध की कथा, प्राचीन नाटकों और आख्यानों में महिलाओं की कला–कुशलता का प्रमाण मिलता है। कवि कालिदास के नाटकों और जैन–बौद्ध साहित्य में महिलाओं की ललित और अलंकारिक कला में दक्षता का उल्लेख मिलता है। सारतः, प्राचीन भारतीय समाज में स्त्रियाँ न केवल देवी रूप में, बल्कि कला, संस्कृति और सामाजिक जीवन में भी अपनी शक्ति और महत्व का प्रदर्शन करती थीं।

2. औपनिवेशिक काल में महिला कलाकारों की सीमित उपस्थिति (17वीं–19वीं शताब्दी):

भारत में 17वीं, 18वीं और 19वीं शताब्दी तक महिला कलाकारों का स्थान निश्चित नहीं था और पश्चिम की तरह ऐतिहासिक रूप से उनका उल्लेख सीमित था। 17वीं और 18वीं शताब्दी में महिला कलाकार रागमाला लघु चित्रों में सक्रिय थीं और मुगल दरबार में हरम का सामूहिक चित्रांकन करती थीं। ब्रिटिश कला विद्यालयों और शैक्षणिक शैली के प्रभाव से महिलाओं की कला में भागीदारी बढ़ी। 19वीं सदी के मध्य में कोलकाता, मद्रास, मुंबई और लाहौर में कला महाविद्यालय स्थापित हुए, जिन्होंने महिलाओं को फोटोग्राफी, चित्रकला, लिथोग्राफी, रेखाचित्र और डिजाइन जैसी कलाओं में प्रशिक्षण दिया। इन शहरों में पश्चिमी और भारतीय महिलाओं ने कला में शिक्षा प्राप्त की। बॉम्बे आर्ट सोसाइटी की वार्षिक प्रदर्शनी में महिलाओं की सक्रिय उपस्थिति देखी गई।

कुछ महिला कलाकार परिवार में कला की परंपरा से प्रभावित थीं, जैसे एंजेला त्रिडंडे, अंबिका धुरंधर, सुखलता राव, सुनयनी देवी और इंदुमती रूपाकृष्णा। 1869 में कलकत्ता आर्ट सोसाइटी की प्रदर्शनी में पहली बार 25 महिला कलाकारों ने भाग लिया था। यह घटना भारतीय कला जगत में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम साबित हुई। इसने आने वाली पीढ़ियों की महिला कलाकारों के लिए नए अवसरों और प्रेरणा के द्वार खोल दिए।

3. प्रारंभिक स्त्री सृजनशीलता और उसके प्रतिनिधित्व का विकासः

19वीं सदी में आधुनिक भारत की पहली प्रमुख महिला कलाकार राजा रवि वर्मा की बहन मंगलाबाई थम्पुरत्ति थीं, जिन्होंने तैल चित्रों में महारत हासिल की। उनकी रचनाएँ, जैसे 'एक दान करते हुए' **(भिक्षा देना)** एक महिला द्वारा भिक्षुक को भिक्षा देने के दृश्य के माध्यम से समाज में विद्यमान जाति और सामाजिक स्थिति के भेद को उजागर करती है तथा दया और मानवीय संवेदना का संदेश देती है। 'भाई का व्यक्ति चित्र', उनकी कला कुशलता का प्रमाण हैं। हालांकि महिला होने के कारण उनकी स्वतंत्रता सीमित थी, फिर भी उनकी प्रतिभा स्पष्ट रूप से प्रदर्शित हुई।

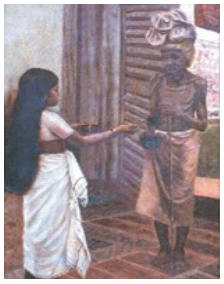

'भिक्षा देना'

राजा रवि वर्मा ने हिंदू पौराणिक कथाओं पर आधारित गायकवाड कमीशन के 14 पेंटिंग कार्य में अपनी बहन मंगलाबाई की सहायता ली। मंगलाबाई ने चित्रण में योगदान दिया, लेकिन उनके कलात्मक योगदान को व्यापक रूप से मान्यता नहीं मिली। उनके चित्रों ने कला के पारखी लोगों से काफी प्रशंसा हासिल की, परन्तु कलात्मक क्षेत्र में उनका योगदान अदृश्य ही रहा है।

राजा रवि वर्मा की कलाकृतियों में महिलाओं की छवि आदर्शवादी रूप में प्रस्तुत की गई, जबकि सर्वप्रथम अवनींद्रनाथ टैगोर ने महिलाओं को राष्ट्रवाद और राजनीतिक जागरूकता के प्रतीक के रूप में चित्रित किया। भारत को देवी रूप में देखने की परंपरा रही है। श्री अरविंद ने भारत को एक सुंदर देवी के रूप में देखा और इसे धार्मिक और राष्ट्रीय प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया। भारत माता की छवि स्वतंत्रता और महिला सशक्तिकरण का प्रतीक बनी। अवनींद्रनाथ टैगोर ने भारत माता को चित्रित करते हुए भारतीय जीवन के प्रतीक को दर्शाया। नारी उनके इस चित्र का केंद्र बिंदु थी। प्रतीकात्मक केसरिया वस्त्र में भारत का आदर्श प्रतिनिधित्व करती है, चार हाथ भारतीय जीवन के चार प्रतीक – भोजन, कपड़ा, शिक्षा और मोक्ष का प्रतीक है। यह चित्रण भारतीय आध्यात्मिकता का प्रतीक है। शांत चेहरे के साथ दिव्य शक्ति उत्सर्जित करते हुए भारतीय परंपरा की खोज को अभिव्यक्त करती है। इसके रूप में कोई स्वांग नहीं झलकता है ना कोई संग्राम या विवाद है। वह एक सामान्य व्यक्ति के समान प्रतीत होती है और आशा और सामर्थ्य के आश्वासन के साथ गरिमा पूर्ण और शिष्ट आदर्श रूप ग्रहण करती है। इस प्रकार अवनींद्रनाथ टैगोर की भारत माता केवल एक चित्र नहीं, बल्कि भारतीय आत्मा और सांस्कृतिक चेतना का सजीव प्रतीक बन जाती है। यह चित्र भारत के आध्यात्मिक आदर्श, मातृत्व और राष्ट्रभक्ति की भावनाओं को एक ही रूप में समेटे हुए है। इसमें नारी को शक्ति, करुणा और ज्ञान के संगम के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो नवजागरण युग के भारत की पहचान बन जाती है।

4. सुनयनी देवीः लोक और आधुनिकता का संगम :

19वीं और 20वीं शताब्दी में महिला सुधारक आंदोलन के माध्यम से महिलाएँ सामाजिक और कलात्मक क्षेत्रों में सक्रिय हुईं। महिला कलाकारों ने भारतीय कला में सक्रिय भागीदारी शुरू की, लेकिन उन्हें ऐतिहासिक अभिलेखों में पर्याप्त मान्यता नहीं मिली। कोलकाता में 1907 में इंडियन सोसाइटी ऑफ ओरिएंटल आर्ट स्थापित हुई, लेकिन प्रारंभिक प्रदर्शनी में महिला कलाकारों की भागीदारी नहीं थी। 1915 में पहली बार महिला कलाकारों जैसे सुनयनी देवी ने प्रदर्शनी में भाग लिया। सुनयनी देवी भारत की पहली मान्यता प्राप्त आधुनिक महिला कलाकार थीं। कलकत्ता के प्रसिद्ध टैगोर परिवार में जन्मी, वह रवींद्रनाथ टैगोर की भतीजी और अवनींद्रनाथ व गगनेंद्रनाथ टैगोर की बहन थीं। स्व–शिक्षित कलाकार होने के बावजूद उन्होंने अपने तीसवें दशक में चित्रकारी शुरू की। उनकी कला में लोक शैली, पौराणिक विषय और कोमल जलरंगों का सुंदर संयोजन मिलता है। उनकी चित्र शैली में लम्बी आकृतियाँ, कमल–नयन चेहरे और काव्यात्मक सरलता दिखाई देती है, जो अजंता व जैन चित्रकला से प्रेरित थी। उनके चित्रों में रामायण, महाभारत, कृष्ण लीला जैसे पौराणिक प्रसंगों के साथ–साथ महिलाओं के घरेलू और आध्यात्मिक जीवन के दृश्य भी प्रमुख हैं, जिससे भारतीय कला में स्त्री दृष्टिकोण का नया आयाम जुड़ा।

सुनैना देवी, लक्ष्मी

https://doi.org/10.31995/an.2025.v16i02.028

सुनयनी देवी की कला सरल, स्पष्ट और वास्तविक भारतीय ग्रामीण कला का प्रतीक थी। उनकी पेंटिंग्स में राष्ट्रवाद, लोक कला की प्रामाणिकता और आधुनिकता का संयोजन स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। 1927 के बाद उन्होंने लोक और लोकप्रिय कला के साथ गहन संबंध स्थापित किया और उनकी रचनाओं में लोकतत्व प्रचुर मात्रा में था। उनकी कला का महत्वपूर्ण तत्व उनकी कला के दो पक्षों को देखना है सुनयनी ने सरस्वती को एक सामान्य विषय के रूप में चित्रित किया। अपने जीवन में वे सरस्वती से प्रभावित थी जो संगीत, गायन, चित्रकला और भी अन्य कुशलता में निपुण देवी मानी जाती है, इसके विपरीत उनके चित्र का अन्य पक्ष कोतवाल का व्यक्ति चित्र है जो श्याम से प्रेरित है जो टैगोर के नृत्य नाटक का पात्र है। उनके पेंटिंग के लिए चुने गए धरातल और पेपर के दोनों ओर चित्रण करना उनकी कला की विशेषता थी। उन्होंने 1905 से 1938 तक सक्रिय रूप से चित्रकला की, और अपने पति की मृत्यु के बाद चित्रणकार्य बंद कर दिया।

स्टेला क्रेमरिश ने सुनयनी की चित्रकला प्रक्रिया का वर्णन करते हुए कहा कि उन्होंने अवनींद्रनाथ की वॉश पेंटिंग से प्रेरणा ली। पहले बाह्य रेखा अंकित की जाती और फिर जल रंगों से भराव किया जाता था, जिससे आकृतियों को जीवंतता और रूपों को उत्कृष्ट स्पर्श मिलता था। 20वीं सदी के अंतिम दो दशकों में महिला कलाकारों की सक्रियता और उन्नति देखी गई। उन्होंने युवा और भावी कलाकारों को रूढ़िवादी प्रदर्शन से मुक्त होकर नवीन तरीकों से स्वयं को अभिव्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित किया। इन्होंने अपने रंगों और रेखाओं के माध्यम से समाज में स्त्री की बदलती भूमिका को नए आयाम दिए। उन्होंने यह सिद्ध किया कि कला केवल अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि विचार, संवेदना और आत्मसाक्षात्कार का सशक्त माध्यम भी है। भारत में जहाँ पिछले दशक के दौरान पुरुष वर्चस्व ने बौद्धिक और तर्कसंगत रूप से प्रभावित किया वही 20वीं सदी के पिछले दो दशकों में महिला कलाकारों की उन्नति को भी देखा गया। युवा या भावी कलाकारों को एक नवीन तरीके से स्वयं को अभिव्यक्त करने हेतू प्रोत्साहित किया और किसी भी स्वरूप की रूढ़िवादी प्रदर्शन से स्वयं को मुक्त किया।

5. अमृता शेरगिलः आधुनिक भारतीय चित्रकला की अग्रदूत (1913–1941):

'नववधू का श्रृंगार

भारतीय आधुनिक कला में पहली पेशेवर महिला कलाकार अमृता शेरगिल थीं, जिन्होंने महिलाओं के व्यावसायीकरण और महिला पक्षपात के मुद्दों को उजागर किया। उन्होंने अपने चित्रों में ग्रामीण जन–जीवन और महिलाओं को आदर्श रूप में नहीं बल्कि सामान्य, प्राकृतिक रूप में प्रस्तुत किया। उनकी कला भारतीय परंपरा, अजन्ता और पहाड़ी शैली के साथ पश्चिमी प्रभाव का समामेलन थी। अमृता का जन्म हंगरी में हुआ, माता हंगेरियन और पिता सिख थे। बचपन से ही चित्रकारी में रुचि रखने वाली अमृता ने भारत और यूरोप में कला शिक्षा प्राप्त की और 1932 में पेरिस में अपने चित्रों को प्रदर्शित कर कला आलोचकों का ध्यान आकर्षित किया। भारत लौटकर उन्होंने भारतीय और आधुनिक दृष्टिकोण का मिश्रण प्रस्तुत किया।

उनके कार्यों में उनकी संवेदनशीलता, रंग और रूपों की व्यवस्था, आदिम कला की मार्मिकता और गरीब जीवन के चित्रण की सराहना की गई। अमृता ने भारतीय परंपरा और पश्चिमी प्रभाववाद को जोड़कर

एक अद्वितीय चित्रमय शैली विकसित की, जिसने भारतीय कला और समकालीन महिला कलाकारों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी। उनकी कला ने महिलाओं के चित्रण में बदलाव लाया और यह दिखाया कि महिलाओं को नारीत्व का वास्तविक सम्मान और महत्वाकांक्षा प्राप्त होनी चाहिए। गोगी सरोजपाल, नीलिमा शेख, अर्पणा कौर, अर्पिता सिंह जैसी समकालीन महिला कलाकारों ने उनके मार्ग का अनुसरण किया। अमृता शेरगिल की कला ने न केवल भारतीय चित्रकला को नई दिशा दी, बल्कि महिलाओं की अभिव्यक्ति को एक सशक्त आवाज भी प्रदान की। वे आज भी हर उस कलाकार के लिए प्रेरणा हैं जो अपनी सृजनशीलता से समाज में परिवर्तन लाना चाहता है।

6. शांतिनिकेतन और महिला कला शिक्षा का विस्तारः

1919 में रविंद्रनाथ टैगोर ने नंदलाल बोस को शांतिनिकेतन में कला भवन का प्रबंधन करने के लिए आमंत्रित किया। शीघ्र ही कई महिला शिक्षक भी नियुक्त हुईं, जैसे स्टेला क्रैमरिश (कला इतिहास), लीजा वान पॉट (मूर्तिकला) और गौरी देवी (डिज़ाइन)। सुचेता कृपलानी और जया अप्पास्वामी शांतिनिकेतन की पहली महिला कला विद्यार्थी थीं। जया अप्पास्वामी ने नंदलाल बोस के निर्देशन में अध्ययन किया और बंगाल स्कूल की परंपरा में चित्रकला विकसित की।

1940 के दशक में कलकत्ता में बंगाल स्कूल के बाद नए कलाकार समूह उभरे। इस समूह में महिला कलाकार कमला दास गुप्ता, कुम्मी डलास, रोमा मुखर्जी, रेबा हौर, दमयंती चावला, शानू लाहिरी, अमीना कर और कमला राय चौधरी शामिल थीं। कमला राय चौधरी ने 1950 में अपने नग्न चित्र प्रदर्शित किए, जिसे मीडिया ने विवादास्पद माना। पश्चिमी अकादमी शैली में प्रशिक्षित कुछ महिला कलाकारों ने पेरिस जैसे शहरों में अपनी प्रतिभा प्रदर्शित की। 1950 के दशक में दिल्ली कॉलेज ऑफ आर्ट, एम.एस. विश्वविद्यालय बड़ौदा और अन्य कला विद्यालयों में महिलाओं की उपस्थिति बढ़ी। इस समय मीरा मुखर्जी, नसरीन मोहम्मदी, रीना भार्गव और अंजलि इला मेनन जैसी महिला कलाकार उभरीं। इन सभी महिला कलाकारों ने न केवल भारतीय कला जगत में अपनी अलग पहचान बनाई, बल्कि उन्होंने समाज में महिला सृजनशीलता की नई परिभाषा भी गढ़ी। उनके कार्यों में आधुनिकता, परंपरा और नारी संवेदना का अद्भुत संगम दिखाई देता है। शांतिनिकेतन से प्रारंभ हुई यह यात्रा आगे चलकर भारतीय कला आंदोलन का अभिन्न हिस्सा बनी। इन कलाकारों ने आने वाली पीढ़ियों की महिला कलाकारों के लिए प्रेरणा का मार्ग प्रशस्त किया और भारतीय कला को वैश्विक मंच पर सम्मान दिलाया।

7. स्वतंत्रता के बाद का कालः नई चेतना और प्रयोगवाद (1950–1980) :

1970 और 1980 के दशकों में महिला कलाकारों ने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी कलाकृतियों के माध्यम से महत्वपूर्ण योगदान दिया। स्वतंत्रता के बाद समकालीन भारतीय कला में क्रांतिकारी परिवर्तन आया, जिसमें नए रूपाकार, विविध माध्यम और अमूर्त कला की ओर झुकाव देखा गया। इस दौर में कलाकारों ने व्यक्तिवाद, सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक पहलुओं को कलाकृतियों में शामिल किया। महिला कलाकारों की आत्मनिर्भरता और कला क्षेत्र में सक्रियता इसी समय प्रमुख रूप से दिखाई दी, विशेषकर मुंबई और नई दिल्ली में विरोध और शहरी जीवन के दृष्टिकोणों को चित्रित करने में। 1960 के दशक में ललिता कट, अनुपम सूद, नलिनी मलानी, इरा रॉय, नीलिमा शेख, मृणालिणी मुखर्जी, गोगी सरोजपाल जैसे कलाकारों ने कला क्षेत्र में पहचान बनाई। 1970 और 1980 के दशक में भारतीय महिला कलाकारों की विशेष

https://doi.org/10.31995/an.2025.v16i02.028

सक्रिय भागीदारी दिखाई दी। स्वतंत्रता के बाद का समय उनके आधुनिक दृष्टिकोण और सामाजिक–सांस्कृतिक चेतना को प्रदर्शित करता है, जिसमें उन्होंने लैंगिक हिंसा, शोषण, दहेज, कन्या भ्रूण हत्या, सामाजिक असमानता और अन्य राष्ट्रीय मुद्दों पर कलात्मक अभिव्यक्ति की। इन कलाकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से न केवल समाज में स्त्री की स्थिति पर प्रश्न उठाए, बल्कि उसकी शक्ति, संघर्ष और अस्तित्व को भी नई परिभाषा दी। उनकी कला ने व्यक्तिगत अनुभवों को सामाजिक यथार्थ से जोड़ते हुए एक नए विमर्ष की शुरुआत की। इस दौर की महिला कलाकारों ने भारतीय कला जगत में स्त्री दृष्टि को स्थापित किया और कला को केवल सौंदर्यबोध का माध्यम न मानकर सामाजिक परिवर्तन का सशक्त साधन बनाया। इस प्रकार, 1970 और 1980 के दशक भारतीय समकालीन कला में महिला सशक्तिकरण और रचनात्मक स्वतंत्रता के प्रतीक बन गए।

8. नारीवाद और समकालीन कला में स्त्री दृष्टि का उदयः

1960 और 1970 के दशकों में विभिन्न कला आंदोलनों जैसे कलकत्ता ग्रुप (1940), प्रोग्रेसिव आर्ट ग्रुप (1947), 1890 ग्रुप (1963), ग्रुप 8, प्रिंटमेकर्स ग्रुप, नवतांत्रिक ग्रुप और प्रिंटमेकिंग गिल्ड के उद्भव के साथ महिलाओं की भागीदारी और योगदान स्पष्ट रूप से दिखाई दिया। इन कलाकारों ने भारतीय सांस्कृतिक पहलुओं का पुनरुद्धार किया, समाज की आलोचना की और जीवन के अनुभवों को कलात्मक भाषा में व्यक्त किया। इस समय पश्चिमी नारीवादी आंदोलन से प्रेरित होकर महिला कलाकार समकालीन संदर्भ में कार्य करने लगीं। उन्होंने नारीवाद को कलात्मक रूप में प्रस्तुत किया और सामाजिक–सांस्कृतिक समानता, अधिकार और सम्मान के लिए संघर्ष को अपने कार्यों में उकेरा। 1970 और 1980 के दशक में 'आत्म–जागरूक समूह' के रूप में महिला कलाकार उभरे, जिन्होंने नारी परिप्रेक्ष्य से महत्वपूर्ण कलाकृतियाँ प्रस्तुत कीं। प्रमुख कलाकारों में अर्पिता सिंह, अंजलि इला मेनन, माधवी पारेख, गोगी सरोजपाल, नलिनी मलानी, अर्पणा कौर और कंचन चंदर एवं अन्य कलाकार शामिल हैं। न प्रयासों ने भारतीय समकालीन कला में स्त्री दृष्टि को एक नई पहचान दी। महिला कलाकारों ने पारंपरिक सीमाओं को चुनौती दी और अपने व्यक्तिगत अनुभवों तथा सामाजिक वास्तविकताओं को कला के माध्यम से व्यक्त किया। उनकी कलाकृतियों में संवेदनशीलता, आत्म–साक्षात्कार और समाज की आलोचना का मेल देखने को मिलता है। इस तरह, नारीवादी दृष्टिकोण ने न केवल कला की विषयवस्तु को समृद्ध किया बल्कि महिलाओं की सामाजिक और सांस्कृतिक भूमिका को भी उजागर किया। आज यह परंपरा नई पीढ़ी की महिला कलाकारों में भी जीवंत रूप से जारी है।

निष्कर्षः

भारत में महिला कलाकारों ने कला के क्षेत्र में नया दृष्टिकोण और महत्वपूर्ण योगदान प्रदान किया है। उन्होंने ऐतिहासिक और रचनात्मक कार्य किए, जिनसे कला जगत में नए रुझान और आंदोलन विकसित हुए। विभिन्न माध्यमों और प्रयोगों के माध्यम से महिलाओं ने अपने विशिष्ट मुद्दों को अभिव्यक्त किया और आधुनिक भारतीय कला के विकास में अहम भूमिका निभाई। इन कलाकारों ने समाज की सीमाओं और बाधाओं को तोड़ते हुए जीवन की चुनौतियों और संघर्षों का सामना किया और समकालीन कला जगत में अपनी पहचान बनाई। उस समय महिलाओं पर सामाजिक, मानसिक और शारीरिक दबाव काफी था, जो उनके कार्यों में स्पष्ट दिखाई देता है। आज महिला कलाकारों ने कला क्षेत्र में अपनी क्षमता को और विकसित किया है, पुरुषप्रधान कला जगत में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है और अपना अलग स्थान बनाया है।

डॉ. गरिमा कुमारी

वर्तमान समय में महिला कलाकारों ने स्त्रियों को नई पहचान दिलाई है और उनके अधिकारों के संरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। महिलाओं की कला क्षेत्र में भागीदारी आज प्रभावशाली रूप से बढ़ रही है और वे समकालीन कला के विकास में निर्णायक भूमिका निभा रही हैं। महिला कलाकार न केवल कला की नई दिशाएँ खोज रही हैं, बल्कि समाज में स्त्री सशक्तिकरण और समानता की दिशा में भी महत्वपूर्ण संदेश दे रही हैं। उनकी रचनाएँ आज भविष्य की पीढ़ियों के लिए प्रेरणा और मार्गदर्शन का स्रोत बन चुकी हैं।

संदर्भ

1. Chatterjee, Ram. *Indian Drawing Today*. Jehangir Art Gallery, 1987.
2. Dalmia, Yashodhara. and Hashmi S. *Memory Metaphors Mutation: Contemporary art of India and Pakistan*, Oxford University Press, 2007.
3. Karode, Rubina. *Manifestations II: Indian Art in the 20th Century-100 Artists*. Delhi Art Gallery, 2004.
4. Lutzker, M.A. *Five artists from India: Gogi Saroj Pal, Rekha Rodwittiya, Navjot Altaf, Anupam Sud, Rummana Hussain.* Jstor. woman's art journal, vol23, no2, autumn, winter, 2003, pp. 21-22. Retrieved from http://www.jstor.org/pss/1358704. [accessed 20.2.2021]
6. Mago, Prannath. *Contemporary Art in India: A Perspective.* National Book Trust, 2012.
7. Mitter, Partha. *Art and Nationalism in Colonial India 1850-1922: Occidental Orientation*. Cambridge University Press.
8. Sinha, Gayatri. *Expression and Evocation: Contemporary Women Artists of India*. Marg Publication, 1996.

चित्र स्त्रोत

1. **'नववधू का श्रृंगार', 1930, अमृता, शेरगिल, कैनवास पर तैल चित्र।** (**Image Source:**https://artsandculture.google.com/asset/bride-s-toilet-amrita-sher-gil/xQFBEtHIb8eQDg?hl=en)
2. **'भिक्षा देना', 1900, मंगलबाई, थंपुरट्टी कैनवास पर तैल चित्र।** (**Image Source:** https://www.theheritagelab.in/mangala)
3. **लक्ष्मी, 20 वी0 शताब्दी, सुनैना देवी, वॉश टेंपरा ऑन पेपर।** (**Image Source:** https://paintphotographs.com/article/sunayani-devi-artist-profile?srsltid=AfmBOoq7j_HsThjpYlmAgWoiW55zPNZ4SokiMfEpuN8aqyxAVk9AKwva)